International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ऑनलाइन शिक्षा में लिंग आधारित सहभागिताः कोविड–19 के दौरान छात्रों और छात्राओं के अनुभवों की तुलना

[1] Varuna Raghav, [2] Dr. Neeru Verma & [3]Dr. S. P. Tripathi
[1] Research Scholar (Education),
[2 & 3] Research Guide, Bhagwant University Ajmer, Rajasthan, India
EMAIL ID: pankartanwar@gmail.com

Edu. Res. Paper-Accepted 15 May 2023 Pub.: Dt. 30 July 2023

सारांश

इस शोध प्रपत्र में, मैंने विषय ''ऑनलाइन शिक्षा में लिंग आधारित सहभागिताः कोविड–19 के दौरान छात्रों और छात्राओं के अनुभवों की तुलना'' का यथासंभव वर्णन किया है। कोविड–19 महामारी के दौरान शिक्षा प्रणाली में अचानक हुए परिवर्तन ने पारंपरिक कक्षाओं को डिजिटल माध्यमों से बदल दिया, जिससे छात्रों और छात्राओं के अनुभवों में महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिला। यह अध्ययन ऑनलाइन शिक्षा के संदर्भ में लिंग आधारित सहभागिता की पड़ताल करता है, जिसमें छात्रों और छात्राओं के अनुभवों की तुलना की गई। शोध से यह स्पष्ट हुआ कि तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, इंटरनेट कनेक्टिविटी, घरेलू वातावरण, सामाजिक–सांस्कृतिक अपेक्षाएं और पारिवारिक सहयोग जैसे कारक लिंग के आधार पर शिक्षा में भागीदारी को प्रभावित करते हैं। छात्र जहाँ तुलनात्मक रूप से अधिक स्वतंत्रता, समय और संसाधनों तक पहुंच रखते हैं, वहीं छात्राओं को घरेलू कार्यों, सीमित संसाधनों और निजता की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, कई छात्राओं ने ऑनलाइन शिक्षा के दौरान मनोवैज्ञानिक दबाव, स्क्रीन–टाइम की थकान और सामाजिक अपेक्षाओं के कारण अपनी भागीदारी में कमी महसूस की। दूसरी ओर, कुछ छात्राएं जिन्होंने पारिवारिक सहयोग और बेहतर तकनीकी संसाधन प्राप्त किए, उन्होंने ऑनलाइन शिक्षा को एक सकारात्मक अवसर के रूप में भी देखा। यह अध्ययन दर्शाता है कि ऑनलाइन शिक्षा में लिंग आधारित सहभागिता केवल तकनीकी पहलू तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं से भी गहराई से जुड़ी हुई है। इस प्रकार, शिक्षा के डिजिटलकरण को समावेशी और समान अवसरों वाला बनाने के लिए नीति निर्माताओं, शैक्षणिक संस्थानों और समुदायों को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है।

शब्दकुंजी– कोविड–19, डिजिटल माध्यम, ऑनलाइन शिक्षा, इंटरनेट कनेक्टिविटी, और घरेलू वातावरण आदि।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रस्तावना

ऑनलाइन शिक्षा में लिंग आधारित सहभागिता पर यह अध्ययन कोविड–19 महामारी के दौरान छात्रों और छात्राओं के अनुभवों की तुलना करता है, ताकि डिजिटल शिक्षा में लैंगिक असमानताओं की जटिलताओं को समझा जा सके। महामारी ने शिक्षा प्रणाली को पारंपरिक कक्षाओं से ऑनलाइन मोड में स्थानांतरित कर दिया, जिससे छात्रों के सीखने के तरीके, सहभागिता और शैक्षणिक परिणामों पर गहरा प्रभाव पड़ा। हालाँकि, इस संक्रमण ने लैंगिक आधार पर विभिन्न चुनौतियों को उजागर किया, जैसे कि तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, घरेलू जिम्मेदारियों का बोझ, सामाजिक–आर्थिक स्थिति और मनोवैज्ञानिक तनाव। यह शोध छात्राओं और छात्रों के बीच इन अनुभवों के अंतर को विश्लेषित करता है, जिसमें पाया गया कि छात्राओं ने अक्सर घर की जिम्मेदारियों और डिजिटल साक्षरता की कमी के कारण अधिक बाधाओं का सामना किया, जबकि छात्रों को तकनीकी पहुँच और स्वतंत्र शिक्षण वातावरण के मामले में लाभ हुआ। इस अध्ययन का उद्देश्य ऑनलाइन शिक्षा में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत सुझाव प्रदान करना है, ताकि भविष्य में किसी भी संकट की स्थिति में सभी छात्रों को समान शैक्षणिक अवसर मिल सकें। यह शिक्षा क्षेत्र में लैंगिक संवेदनशीलता और समावेशी रणनीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

शोध के उद्देश्य

- कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों और छात्राओं की भागीदारी की दर की तुलना करना।
- लड़के और लड़कियों के बीच तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता और उपयोग में अंतर का मूल्यांकन करना।
- ऑनलाइन शिक्षा से जुड़े सामाजिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक अनुभवों में लिंग के आधार पर अंतर को विश्लेषित करना।

लिंग आधारित सहभागिता का अर्थ

लिंग आधारित सहभागिता का अर्थ है किसी गतिविधि, प्रक्रिया या अवसर में पुरुषों और महिलाओं (या अन्य लिंगों) की भागीदारी की दर, गुणवत्ता, प्रकृति और अनुभवों के बीच मौजूद अंतर को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समझना। शिक्षा, रोजगार, राजनीति, स्वास्थ्य सेवाओं और डिजिटल दुनिया जैसे क्षेत्रों में यह सहभागिता भिन्न–भिन्न हो सकती है और इसके पीछे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा पारिवारिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब हम शिक्षा की बात करते हैं, विशेषकर ऑनलाइन शिक्षा की, तो यह देखा गया है कि तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, घर में भूमिका व जिम्मेदारियाँ, और सामाजिक अपेक्षाएँ लड़कों और लड़कियों की सहभागिता को प्रभावित करती हैं। उदाहरणस्वरूप, कई बार छात्राओं को ऑनलाइन कक्षाओं में नियमित रूप से भाग लेने में कठिनाई होती है क्योंकि उन्हें घरेलू कार्यों में सहयोग देना पड़ता है या घर में उपयुक्त अध्ययन वातावरण नहीं होता। वहीं, छात्रों को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता और तकनीकी संसाधन प्राप्त होते हैं, जिससे उनकी सहभागिता सुगम हो जाती है। इस प्रकार, लिंग आधारित सहभागिता केवल उपस्थिति या भागीदारी की संख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अनुभव, पहुँच, आत्मविश्वास और परिणामों की गुणवत्ता भी शामिल होती है। यह अवधारणा सामाजिक समानता और समावेशी विकास की दिशा में एक आवश्यक विश्लेषण का आधार प्रस्तुत करती है।

कोविड–19 महामारी की उत्पत्ति और वैश्विक प्रभाव

कोरोना वायरस महामारी की शुरुआत दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर से हुई, जहाँ अचानक कई लोगों में बिना किसी स्पष्ट कारण के निमोनिया जैसे लक्षण दिखाई देने लगे। इन मामलों में एक समानता यह थी कि अधिकांश लोग वुहान के सी फूड मार्केट से जुड़े थे, जहाँ मछलियों के साथ–साथ जीवित जानवरों का व्यापार भी होता था। चीनी वैज्ञानिकों ने एक नए प्रकार के कोरोनावायरस की पहचान की जिसे प्रारंभ में 2019–दब्बट नाम दिया गया। इस वायरस का जीनोम लगभग 70: सार्स वायरस से मेल खाता है। धीरे–धीरे यह संक्रमण बाजार से न जुड़े लोगों में भी पाया गया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि यह वायरस मानव–से–मानव में भी फैल सकता है। 20 जनवरी 2020 को चीन सरकार ने इस पर नियंत्रण के लिए गंभीर प्रयास शुरू किए। 23 जनवरी को वुहान को पूरी तरह से लॉकडाउन कर दिया गया। इसके बाद कई अन्य शहरों को भी सील कर दिया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने प्रारंभ में इसे अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित नहीं किया, परंतु 30 जनवरी 2020 को इसे अंतरराष्ट्रीय चिंता की सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति घोषित कर दिया गया। महामारी के फैलने के साथ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ही चीन के बाहर कई देशों में भी संक्रमण के मामले तेजी से बढ़े। 14 मार्च 2020 तक 5,800 से अधिक लोगों की मृत्यु हो चुकी थी और 20 मार्च 2020 तक यह संक्रमण 160 से अधिक देशों में फैल चुका था। कोविड–19 का संक्रमण बेहद तीव्रता से फैलता है और स्वास्थ्य सेवाओं पर अत्यधिक दबाव डालता है। 9 जनवरी 2020 को इस वायरस से पहली मौत की पुष्टि हुई थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस नए कोरोनावायरस को आधिकारिक नाम ''कोविड–19'' दिया। अब तक यह वायरस वैश्विक स्तर पर 16 करोड़ से अधिक लोगों को संक्रमित कर चुका है और लगभग 50 लाख से अधिक लोगों की जान जा चुकी है।

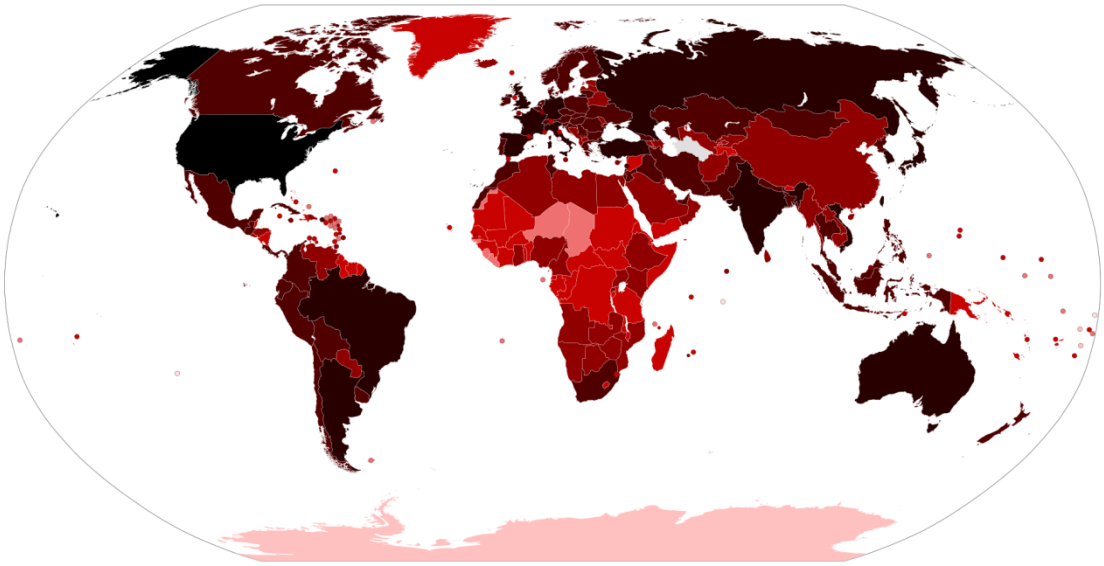

2019–2020 कोरोना वायरस का प्रकोप

1,000,000+ पुष्ट मामलें

100,000–999,999 मामलों की पुष्टि

10,000–99,999 मामलों की पुष्टि

1,000–9,999 मामलों की पुष्टि

100–999 मामलों की पुष्टि

1–99 मामलों की पुष्टि

अपुष्ट मामले अथवा कोई डेटा नहीं

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ऑनलाइन शिक्षा में लिंग आधारित सहभागिता

कोविड–19 महामारी ने शिक्षा के पारंपरिक स्वरूप को बदलते हुए ऑनलाइन शिक्षा को मुख्य माध्यम बना दिया। इस संक्रमण के कारण स्कूलों और कॉलेजों के बंद हो जाने के बाद डिजिटल तकनीक के माध्यम से पढ़ाई को जारी रखने का प्रयास किया गया। हालाँकि यह बदलाव आवश्यक और तात्कालिक था, परंतु इससे जुड़ी कई सामाजिक और तकनीकी चुनौतियाँ भी सामने आईं, जिनमें सबसे प्रमुख मुद्दा था लिंग आधारित सहभागिता।

ऑनलाइन शिक्षा में लड़के और लड़कियों की भागीदारी समान नहीं रही। लिंग के आधार पर संसाधनों की पहुँच, पारिवारिक अपेक्षाएँ और सामाजिक मान्यताओं के चलते छात्राएँ अपेक्षाकृत पीछे रहीं। विशेषकर ग्रामीण और निम्न आय वर्ग के परिवारों में यह विषमता और अधिक देखी गई।

1. संसाधनों की असमान पहुँच– अध्ययनों से पता चला है कि लड़कों को तकनीकी संसाधन– जैसे स्मार्टफोन, लैपटॉप और हाई–स्पीड इंटरनेट– लड़कियों की तुलना में अधिक सुलभ थे। अनेक घरों में केवल एक ही स्मार्टफोन था, जिसे प्राथमिकता लड़कों को दी जाती थी। इससे लड़कियों की ऑनलाइन कक्षाओं में भागीदारी सीमित हो गई।
2. पारिवारिक और सामाजिक अपेक्षाएँ– भारतीय समाज में आज भी कई परिवारों में लड़कियों से घरेलू कामों में सहयोग की अपेक्षा की जाती है। महामारी के दौरान जब सभी लोग घर पर थे, तो लड़कियों पर खाना पकाने, छोटे बच्चों की देखभाल, सफाई आदि का बोझ और अधिक बढ़ गया। यह कार्यभार उनकी पढ़ाई में बाधा बना। इसके विपरीत लड़कों को पढ़ाई के लिए अधिक समय और स्वतंत्रता प्राप्त थी।
3. मनोवैज्ञानिक दबाव और शिक्षा से दूरी– लड़कियों में ऑनलाइन शिक्षा के प्रति आत्मविश्वास की कमी और तकनीकी ज्ञान की कमी भी बाधक सिद्ध हुई। कई छात्राएँ अपने भाइयों या पिताओं के मोबाइल से पढ़ने के कारण असहज महसूस करती थीं, जिससे वे ऑनलाइन शिक्षा से दूर होती गईं। कुछ क्षेत्रों में यह भी पाया गया कि इंटरनेट और मोबाइल के इस्तेमाल पर लड़कियों को सामाजिक नजरिए से संदेह की दृष्टि से देखा जाता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

4. प्रयास और समाधान– सरकार और विभिन्न संगठनों ने टीवी आधारित शिक्षा, रेडियो कार्यक्रम, निशुल्क डेटा योजना, और ष्दीक्षाष् जैसे प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से शिक्षा को पहुँचाने का प्रयास किया। परंतु इन प्रयासों की पहुँच भी लड़कों की तुलना में लड़कियों तक कम रही।

ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षा क्षेत्र में डिजिटल खाई और लिंग आधारित भेदभाव को उजागर किया है। यदि भारत को शिक्षा के क्षेत्र में समानता प्राप्त करनी है, तो तकनीकी संसाधनों की समान उपलब्धता, सामाजिक जागरूकता, और लिंग–संवेदनशील नीतियों की आवश्यकता है। लड़कियों को डिजिटल सशक्तिकरण के माध्यम से शिक्षा की मुख्यधारा में बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

कोविड–19 के दौरान छात्रों और छात्राओं के अनुभवों की तुलना

कोविड–19 महामारी ने दुनिया भर में शिक्षा प्रणाली को गहराई से प्रभावित किया। भारत में भी, स्कूल और कॉलेज बंद होने के कारण छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा पर निर्भर रहना पड़ा। हालाँकि, इस दौरान छात्रों और छात्राओं के अनुभवों में महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिले। लैंगिक आधार पर डिजिटल शिक्षा तक पहुँच, मानसिक स्वास्थ्य, घरेलू जिम्मेदारियों और शैक्षणिक प्रदर्शन में असमानताएँ स्पष्ट रूप से उभरीं। यह लेख विभिन्न अध्ययनों और आँकड़ों के आधार पर इन अंतरों की विस्तृत तुलना प्रस्तुत करता है।

1. डिजिटल शिक्षा तक पहुँच में असमानता– ऑनलाइन शिक्षा के लिए स्मार्टफोन, लैपटॉप और इंटरनेट कनेक्टिविटी आवश्यक थी, लेकिन भारत जैसे देश में ये संसाधन सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं थे। विशेष रूप से छात्राओं को इस मामले में अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

लिंग	स्मार्टफोन/लैपटॉप की उपलब्धता	इंटरनेट सुविधा
छात्र	78 प्रतिशत	72 प्रतिशत
छात्राएँ	65 प्रतिशत	58 प्रतिशत

स्रोतः यूनिसेफ रिपोर्ट, 2021 (भारत)

तालिका 1: डिजिटल उपकरणों तक पहुँच (प्रतिशत)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- परिवारों की प्राथमिकता– कई परिवारों में लड़कों को तकनीकी उपकरण पहले दिए गए, क्योंकि उनकी शिक्षा को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता था।
- ग्रामीण–शहरी अंतर– ग्रामीण क्षेत्रों में यह अंतर और भी स्पष्ट था, जहाँ इंटरनेट कनेक्टिविटी पहले से ही कम थी।
- साझा उपकरणों की समस्या– कई छात्राओं को भाइयों या पिता के साथ फोन/लैपटॉप साझा करना पड़ता था, जिससे उनकी पढ़ाई का समय प्रभावित होता था।

2. मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव– लॉकडाउन और सामाजिक अलगाव ने छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डाला। हालाँकि, छात्राओं ने इस दौरान अधिक तनाव, चिंता और अवसाद का अनुभव किया।

लिंग	तनाव/चिंता	नींद की समस्या	अवसाद
छात्र	42 प्रतिशत	35 प्रतिशत	28 प्रतिशत
छात्राएँ	58 प्रतिशत	47 प्रतिशत	39 प्रतिशत

स्रोतः NCERT सर्वे, 2021 (भारत)

तालिका 2: मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ (प्रतिशत)

- घरेलू दबाव– छात्राओं को पढ़ाई के साथ–साथ घर के कामों में अधिक समय देना पड़ता था, जिससे उनका अध्ययन समय कम हो जाता था।
- सामाजिक अलगाव– लड़कियों को अक्सर घर से बाहर कम निकलने दिया जाता था, जिससे उनमें अकेलेपन की भावना बढ़ी।
- भविष्य की चिंता– कई छात्राओं को लगा कि उनकी शिक्षा बाधित हो रही है, जिससे उनके करियर की संभावनाएँ प्रभावित होंगी।

3. घरेलू जिम्मेदारियों का बढ़ता बोझ– लॉकडाउन के दौरान, छात्राओं को पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं के कारण अधिक घरेलू काम करने पड़े। इससे उनकी पढ़ाई का समय काफी कम हो गया।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

लिंग	पढ़ाई का समय	घर के काम का समय
छात्र	5–6 घंटे	1–2 घंटे
छात्राएँ	3–4 घंटे	3–4 घंटे

स्रोतः ऑक्सफैम इंडिया, 2020

तालिका 3: घरेलू कार्यों में लगने वाला समय (प्रतिदिन औसत)

- लैंगिक भूमिकाओं का प्रभाव– अधिकांश परिवारों में लड़कियों से खाना बनाने, सफाई करने और छोटे भाई–बहनों की देखभाल करने की उम्मीद की जाती थी।
- समय प्रबंधन की चुनौती– छात्राओं को अक्सर रात में पढ़ना पड़ता था, जिससे उनकी नींद और स्वास्थ्य प्रभावित होता था।

4. शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव– ऑनलाइन शिक्षा के कारण छात्राओं की शैक्षणिक प्रगति अधिक प्रभावित हुई। कई राज्यों में लड़कियों के ड्रॉपआउट दर में वृद्धि हुई।

लिंग	नियमित उपस्थिति	कभी–कभी उपस्थिति	कोई भागीदारी नहीं
छात्र	68 प्रतिशत	25 प्रतिशत	7 प्रतिशत
छात्राएँ	52 प्रतिशत	30 प्रतिशत	18 प्रतिशत

स्रोत– ASER 2021 रिपोर्ट

तालिका 4: ऑनलाइन कक्षाओं में भागीदारी (प्रतिशत)

- तकनीकी बाधाएँ– जिन छात्राओं के पास उपकरण नहीं थे, वे कक्षाओं से पूरी तरह छूट गईं।
- घर के कामों की प्राथमिकता– कुछ परिवारों ने लड़कियों की पढ़ाई से ज्यादा घर के कामों को महत्व दिया।
- विवाह का दबाव– कुछ मामलों में, लॉकडाउन के दौरान कम उम्र में शादी करने के कारण लड़कियों की शिक्षा बाधित हुई।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कोविड–19 ने शिक्षा प्रणाली में मौजूद लैंगिक असमानताओं को और बढ़ा दिया। छात्राओं को तकनीकी संसाधनों की कमी, मानसिक तनाव, घरेलू जिम्मेदारियों और शैक्षणिक बाधाओं का सामना करना पड़ा, जबकि छात्रों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर थी। भविष्य में डिजिटल शिक्षा नीतियों को लैंगिक संवेदनशील बनाने और छात्राओं के लिए विशेष सहायता कार्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता है।

शोध की पद्धति

इस अध्ययन में वर्णनात्मक और तुलनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसका उद्देश्य कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों और छात्राओं की सहभागिता के बीच लैंगिक भेदभाव को समझना है। शोध में मिश्रित विधि को अपनाया गया है, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। मात्रात्मक डेटा एकत्र करने के लिए एक सर्वेक्षण प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जो विभिन्न विद्यालयों और कॉलेजों के छात्रों और छात्राओं को ऑनलाइन माध्यम से वितरित की गई। प्रश्नावली में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, ऑनलाइन कक्षाओं में उपस्थिति, घरेलू जिम्मेदारियों, और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े प्रश्न शामिल थे। कुल 300 विद्यार्थियों (150 छात्र और 150 छात्राएँ) से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। गुणात्मक जानकारी के लिए साक्षात्कार और फोकस ग्रुप डिस्कशन का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किए। इससे प्राप्त जानकारी ने आँकड़ों की व्याख्या में गहराई प्रदान की और लिंग आधारित अनुभवों की स्पष्टता को बढ़ाया। डेटा का विश्लेषण प्रतिशत, चार्ट और तुलना तालिकाओं की मदद से किया गया। इसके साथ ही लैंगिक भेदभाव से जुड़े सामाजिक और पारिवारिक कारणों की पहचान की गई। इस शोध पद्धति का उद्देश्य ऑनलाइन शिक्षा में उपस्थित लैंगिक असमानताओं को उजागर करना और भविष्य की नीतियों के लिए साक्ष्य आधारित सुझाव प्रदान करना है।

निष्कर्ष

कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षा ने जहां एक ओर शिक्षा की निरंतरता बनाए रखी, वहीं दूसरी ओर लिंग आधारित सहभागिता में स्पष्ट असमानताएँ उजागर कीं। अध्ययन में यह पाया गया कि छात्राओं की तुलना में छात्रों की ऑनलाइन कक्षाओं में भागीदारी अधिक रही। तकनीकी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संसाधनों की सीमित उपलब्धता, घरेलू कार्यों का बढ़ता बोझ, और सामाजिक मान्यताओं ने छात्राओं की सहभागिता को प्रभावित किया। कई छात्राओं को इंटरनेट या मोबाइल उपकरणों की कमी, निजता की अनुपलब्धता तथा परिवार की प्राथमिकताओं के कारण शिक्षा में पीछे हटना पड़ा। वहीं छात्रों को तुलनात्मक रूप से अधिक स्वतंत्रता और संसाधन प्राप्त हुए। यह अंतर केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी मौजूद रहा। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि ऑनलाइन शिक्षा में लिंग आधारित भेदभाव को दूर करने हेतु समावेशी नीतियों, डिजिटल साक्षरता और परिवार व समुदाय के दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता है।

सदंर्भ ग्रन्थ सुची

1. ली, एक्स., ओधिआम्बो, एफ. ए., और ओकेन्सी, डी. के. डब्ल्यू. (2023)। कोविड–19 महामारी के दौरान छात्रों के ऑनलाइन सीखने के अनुभव का उनकी संतुष्टि पर प्रभावः वरीयता की मध्यस्थ भूमिका। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 14।

2. झू, एक्स., गोंग, क्यू., वांग, क्यू., हे, वाई., सन, जेड., और लियू, एफ. (2023)। कोविड–19 महामारी के दौरान छात्रों की ऑनलाइन शिक्षण सहभागिता का विश्लेषणः एसपीओसी–आधारित भूगोल शिक्षा स्नातक पाठ्यक्रम का एक केस स्टडी। स्थिरता, 15(5), 4544।

3. मुथुप्रसाद, टी., ऐश्वर्या, एस., आदित्य, के.एस., और झा, जी.के. (2021)। कोविड–19 महामारी के दौरान भारत में ऑनलाइन शिक्षा के प्रति छात्रों की धारणा और प्राथमिकता। सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज ओपन, 3(1), 100101।

4. चिउ, टी. के. एफ. (2021)। कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन सीखने में छात्र की भागीदारी को समझाने के लिए आत्मनिर्णय सिद्धांत (एसडीटी) को लागू करना। उच्च शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 18(1), एस14–एस30।

5. लियू, एक्स., हे, डब्ल्यू., झाओ, एल., और हांग, जे.–सी. (2021)। कोविड–19 लॉकडाउन के दौरान स्व–विनियमित ऑनलाइन सीखने में लिंग अंतर। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 12, 752131।

6. यू, जेड. (2021)। कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षण परिणामों पर लिंग, शैक्षिक स्तर और व्यक्तित्व का प्रभाव। उच्च शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 18, 14।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

7. गोस्वामी, एम.पी., थानवी, जे., और पाधी, एस.आर. (2021)। भारत में ऑनलाइन शिक्षा का प्रभावः कोविड–19 संकट के दौरान विश्वविद्यालय के छात्रों का सर्वेक्षण। एशियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल रिसर्च, 9(4), 331।

8. वाल्टर्स, टी., सिमकिस, एन. जे., स्नोडेन, आर. जे., और ग्रे, एन. एस. (2021)। कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षण अनुभव के बारे में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की धारणाः मानसिक स्वास्थ्य और विशिष्ट शिक्षण कठिनाइयों पर प्रभाव। ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 92(3), 843–860।

9. न्यूविर्थ, एल.एस.; जोविक, एस.; मुखर्जी, बी.आर. कोविड–19 के दौरान और बाद में उच्च शिक्षा की पुनर्कल्पनाः चुनौतियाँ और अवसर। जे. एडल्ट कॉन्टिनेंटल एडुक। 2021, 27, 141–156।

10. पाल, डी.; वनिज्जा, वी. भारत में सिस्टम प्रयोज्यता स्केल और प्रौद्योगिकी स्वीकृति मॉडल का उपयोग करके कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म के रूप में माइक्रोसॉफ्ट टीम्स का प्रयोज्यता मूल्यांकन। बाल. युवा सेवा. समीक्षा. 2020, 119, 105535।